Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3, Issue 2, May-August, 2025. pp. 195-202)

संचार की प्राचीनतम भारतीय मान्यताएं एवं संवाददाता

[1]सुमित जोशी
[2]डॉ. विक्रम रौतेला
[3]डॉ. चेतन भट्ट
[4]डॉ. राकेश चंद्र रयाल

सारांश

'भारतीय संस्कृति को विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति माना जाता है।' पुरातन होने के साथ ही ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हमेशा से समृद्ध रही है या यूं कहें कि भारत में बौद्धिक सम्पदा का खजाना रहा है। ज्ञान के भंडार की वजह से भारत प्राचीन काल से विश्वगुरु की उपाधि से अलंकृत रहा है। सांस्कृतिक रूप से प्राचीनतम होने के साथ ही यहां की संचार परंपरा और पद्धति उतनी ही पुरातन रही है। वाचिक संचार प्रणाली इसी समृद्धता का उदाहरण है। वर्षों तक ज्ञान का प्रसार वाचिक शैली में ही होता रहा। वहीं, वेदों को संचार का जनक माना जाता है और नाट्य शास्त्र, श्रीमद्भागवत गीता, कठोपनिषद में यम–नचिकेता संवाद आदि रचनाएं संचार की वैभवशाली परंपरा के दस्तावेज हैं। इन सभी ग्रंथों ने मानव जाति के मार्गदर्शक के रूप में कार्य किया और सदैव विश्व कल्याण के भाव को जागृत करने का काम किया है।

---

[1] शोधार्थी, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड लिबरल आर्ट्स, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड लिबरल आर्ट्स, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)
[3] असिस्टेंट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन, जिज्ञासा विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)
[4] प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

पत्रकारिता, संचार का बेहद महत्वपूर्ण अंग है। पत्र लेखन के साथ पत्रकारिता का उदय हुआ, लेकिन भारतीय पौराणिक कालखंड में देवर्षि नारद संवाददाता के रूप में ठीक वैसे ही कार्य करते थे जैसा एक कुशल पत्रकार करता है। इसी लिए उन्हें सृष्टि का प्रथम पत्रकार माना जाता है। नारदजी ने हमेशा जगतकल्याण के भाव से एक संवाददाता का कार्य किया। इतना ही नहीं रामायण सहित कई ग्रंथों के लेखन कार्य में नारदजी की अहम भूमिका रही है। वहीं, हनुमान ने भी एक खोजी संवाददाता की भूमिका निभाई और रावण की लंका नगरी में जाकर सीता का पता लगाकर श्रीराम के संदेश उन तक पहुंचाए। महाभारत में संजय ने युद्धकाल के दौरान युद्ध संवाददाता की भूमिका निभाते हुए रणभूमि से काफी दूर बैठे और देखने में अक्षम धृतराष्ट्र को पूरा घटनाक्रम सुनाया। इतना ही नहीं भारत में प्रारम्भ हुए प्रथम समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन भी भारतीय मान्यताओं से प्रेरित रहा और नारद जयंती के दिन पहला अंक निकाला गया। भारतीय प्राचीन संचार कौशल की इस समृद्धता की विवेचना प्रस्तुत शोध आलेख में की गई है।

संकेत शब्दः भारतीय ज्ञान परंपरा, प्राचीनतम संचार, भारतीय मान्यताएं, संवाददाता।

प्रस्तावना

संचार प्राणियों द्वारा की जाने वाली एक ऐसी बुनियादी क्रिया है जिसके बगैर कोई भी सजीव नहीं रह सकता है। इस वाक्य की उत्पत्ति देवभाषा संस्कृत की चर धातु से हुई है, जिसका अर्थ है चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचना। (दीक्षित, 2023) आधुनिकता से ओतप्रोत संचार को लेकर अलग–अलग मत हैं और भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी अधिकांश सिद्धांत और मॉडल पश्चिमी विचारों से प्रभावित रहे हैं। लेकिन संचार मानव की उत्पत्ति से ही प्रभावी रहा है और मानवीय विकास में अहम भूमिका निभाई है। (यादव, 2019) समय और युगों के साथ हुई सामाजिक समृद्धि ने संचार को भी परिवर्तित किया है। मगर भाव और विचारों के प्रवाह का मूल प्राचीनतम ज्ञान से ही प्राप्त होता है।

सदियों से भारत देश को विश्वगुरु की उपाधि उसके ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान की समृद्ध परंपरा से ही प्राप्त रही है। वैदिक ज्ञान भारत वर्ष की ज्ञान परंपरा से जुड़ा हुआ पक्ष है। ऐसे में संचार के सृजनकर्ताओं का भारत में अपना अलग ही स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति में वेदों को संचार का जनक कहा जाता है। पूरे विश्व में भारत की वैदिक कालीन संचार अवधारणाओं के समान प्रणाली शायद न रही हो। (उपाध्याय, 2016) भारतीय पौराणिक ज्ञान परंपरा में वाचिक संचार एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है। गुरु शिष्य परंपरा में गुरुजन मौखिक ज्ञान प्रदान करते थे और शिष्य उस विद्या को सुनकर ही कंठस्थ कर लेते थे। जबकि ऋषि–मुनियों द्वारा रचित रचनाएं सदियों तक मौखिक ही पीढ़ी–दर–पीढ़ी

संचारित होती रहीं और सुरक्षित रहीं। इतनी समृद्ध परंपरा होने के बावजूद पश्चिमी विचारकों के संचार सिद्धांतों पर जोर दिया जाता है, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा में अधिकतर सिद्धांत असंगठित रूप में वर्णित मिलते हैं। इसमें भरत मुनि का नाट्य शास्त्र, नारद के भक्ति सूत्र, श्रीमद्भागवत गीता, कठोपनिषद में यम–नचिकेता संवाद आदि ग्रंथ और रचनाएं (उपाध्याय, 2016) भारतीय संचार समृद्धि का दस्तावेजी प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। विश्व को मार्ग दिखाने वाले भारतीय ज्ञान और परंपराओं के केंद्र में लोक मंगल का भाव रहा है। ऐसे में भारतीय संचार और संवाद विश्व कल्याणकारी रहा है। इसमें देवर्षि नारद प्रथम संवाददाता के रूप में जाने जाते हैं। वहीं, कथाओं में हनुमान और महाभारत के संजय का वर्णन भी संचारक के रूप में मिलता है। नारद, हनुमान और संजय में लोक मंगल की भावना रही।

नाट्यशास्त्र और साधारणीकरण की अवधारणा

भारतीय समृद्ध ज्ञान परंपरा में भरत मुनि का नाट्य शास्त्र संचार समृद्धि के प्रतीक के रूप में माना जाता है और यह भारतीय काव्य का एक अंश है। भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में नाट्य कला के साथ ही काव्य, संगीत, नृत्य, शिल्प और ललित कलाओं के साथ ही अन्य को अंकित किया गया है। यह सभी शास्त्र के 36 अध्याय में उल्लेखित छह हजार श्लोकों को में वर्णित किए गए हैं। ईसा पूर्व दूसरी सदी से लेकर पहली सदी के मध्य रचित नाट्य शास्त्र साधारणीकरण के सिद्धांत पर आधारित रहा है। साधारणीकरण संस्कृत काव्य शास्त्र का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। हालांकि, आधुनिक युग में कम्युनिकेशन वाक्य प्रचलन में है। मगर साधारणीकरण लैटिन भाषा के कम्यूनिस, कॉमननेस के काफी करीब है और पश्चिम प्रभावित मॉडलों के चलते संचार वाक्य का सृजन भी इसी से माना जाता है मगर इसका मूल नाट्य शास्त्र में है और इसकी पहचान भट्टनायक से की जाती है। भट्टनायक ने आधुनिक दुनिया से पहले साधारणीकरण का प्रयोग किया था। साथ ही उन्होंने इस बात पर बल दिया था कि संचार का सार समानता और एकात्मता में है। 'साधारणीकरण की अवधारणा है कि इसे केवल सहृदय ही अनुभूत कर सकते हैं, अर्थात ऐसे व्यक्ति जिनमें संदेश ग्रहण करने की क्षमता है। साथ ही यह एक ऐसा गुण है जो संस्कृति, अनुकूलन और सीखने से आता है।' वर्तमान में जहां 'पश्चिम के से प्रभावित मीडिया नकारात्मक समाचारों पर जोर देता है', लेकिन भारतीय समृद्ध और लोक कल्याण की भावना रखने वाली संस्कृति में साधारणीकरण जैसे सिद्धांत किसी प्रकार पूर्वाग्रहों से ग्रसित नहीं रहे हैं। ऐसे में भारतीय संचार परंपरा और ज्ञान के संचारण की संस्कृति किसी भी प्रकार पूर्वाग्रहों से नहीं थी साथ ही संचार में समानता का संदेश देने का काम भी किया गया।

नारद के भक्ति सूत्रों में प्रेम से जगत कल्याण तक का भाव

देवर्षि नारद के संवाद कौशल और विश्व कल्याण के भाव का सुंदर वर्णन प्रमुख ग्रंथ नारद के भक्ति सूत्र में मिलता है। यह भक्ति साहित्य के प्राचीन ग्रंथों में सबसे ज्यादा

आधिकारिक ग्रंथ माना गया है और भक्ति की अवधारणा के दर्शन के साथ ही शास्त्रीय अधिकार को रेखांकित करते हैं। (महाराज, 2023) नारद स्मृति को ईसा छह शताब्दी से भी पुराना माना जाता है। लोक मान्यताओं के अनुसार भक्ति सूत्र की रचना गोवर्धन परिक्रमा मार्ग पर स्थिति नारद कुंड के पास देवर्षि नारद ने एक कुटिया में की थी। (गर्ग, 2018) इस साहित्य में कुल 84 सूक्तियों का वर्णन मिलता है। इसमें प्रथम 24 सूत्र भक्ति की प्रकृति से संबंधित हैं। जबकि 25 से 33 सूत्रों में कर्म, ज्ञान, योग से जुड़े बिंदुओं पर व्याख्या की गई। वहीं अगले 51 से 66 सूत्रों में वास्तविक भक्ति वाले भक्त को दर्शाया गया और अंतिम 67 से 84 सूत्रों में संपूर्ण भक्ति वाले भक्त की प्रशंसा की गई है। (महाराज, 2023) नारद के भक्ति सूत्रों से जुड़े एक सार का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि देवर्षि के सूत्रों में कहा गया है कि भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेम और अमृत स्वरूप है और भक्ति पाकर मानव सिद्ध हो जाता है। इससे मानव को किसी वस्तु की इच्छा नहीं रहती है और वह द्वेष भाव को भी त्याग देता है। साथ ही दुःसंग काम, क्रोध, मोह, स्मृतिभ्रंश, बुद्धिनाश और सर्वनाश का कारण है। ऐसे में दुःसंग के त्याग का संदेश भी दिया है। नारद ने कहा है कि स्त्री, धन, नास्तिक और वैरी का चरित्र नहीं सुनना चाहिए। साथ ही अभिमान और दंश को भी त्याग देना चाहिए। (गर्ग, 2018) ऐसे में नारद के भक्ति सूत्र केवल पत्रकारिता ही नहीं बल्कि पूरे मीडिया के लिए सिद्धांतों को दर्शाता है। इन भक्ति सूत्रों के अनुसार जाति, विद्या, रूप, कुल, दान, जैसे कार्यों के कारण पत्रकारिता द्वारा भेद नहीं किया जाना चाहिए। साथ ही भक्ति सूत्र 72 में देवर्षि नारद समाज में भेद उत्पन्न करने वाले कारकों को बताकर उनको निषेध करते हैं। (महाराज, 2023)

रामायण लेखन में नारद की भूमिका

भारत के महाकाव्य रामायण की रचना में भी देवर्षि नारद की भूमिका भी अहम रही है। रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकि को नारद मुनि ने श्रीराम के चरित्र का वर्णन किया। 'श्रीराम की महिमा का पता नहीं होने के बावजूद वाल्मीकि जी राम–नाम का श्रद्धा से जाप करते थे। एक बार तमसा नदी के पास वन में भ्रमण कर रहे थे। वाल्मीकि श्रीराम के नाम को जपते हुए विचर रहे थे और देवर्षि नारद नारायण–नारायण जपते हुए वहां पहुंचे। यहां वाल्मीकि जी से उनकी भेंट हुई और उनके आश्रम पहुंचे, उन्हें देवर्षि से पूछा कि संसार में मन पर संयम रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला धर्मज्ञ, प्रणियों का हितकर्ता, गुणवान, युद्ध में पराक्रम दिखाने वाले और सुंदर छवि वाला कोई पुरुष है। ऐसे में मुनिवर ने महर्षि वाल्मीकि को बताया कि ऐसा एक मात्र पुरुष इक्ष्वाकु कुल में हुआ है और वह राम नाम से प्रसिद्ध हैं। इसके बाद नारदजी ने श्रीराम की लीलाओं और चरित्र का पूरा वर्णन किया। साथ ही वाल्मीकि जी को प्रभु श्रीराम के चरित्र को लिखने के लिए प्रेरित किया। साथ ही यह भी सुझाव दिया कि प्रभु श्रीराम के चरित्र का प्रचार–प्रसार लोक कल्याण के लिए होगा और इससे लोगों को सत मार्ग में चलने की प्रेरणा मिलेगी। (गर्ग, 2018) ऐसे में नारद मुनि ने लोक कल्याण के भाव

के साथ अपनी संचार शैली के साथ बड़ी रोचकता से श्रीराम के चरित्र का वर्णन किया। ऐसे में रामायण लेखन की प्रेरणा महर्षि वाल्मीकि को मिली। साथ ही वर्तमान में महाकाव्य रामायण लोगों को उन्नति का मार्ग दिखा रहा है।

हनुमान का संचार कौशल

भारतीय पौराणिक कथाओं और ग्रंथों में देवर्षि नारद को सृष्टि के पहले संवादकर्ता के रूप में वर्णित किया गया है। वह लोक कल्याण के भाव से संवाद करते थे और समस्या की स्थिति में समाधान भी देते थे। उन्हीं की तरह रामायण में पवनपुत्र हनुमान का भी सफल संचारक के रूप में चित्रण मिलता है। हनुमान जी वैज्ञानिक संचार में कुशल थे और परिस्थितियों के अनुसार संवाद करते थे। उनकी वार्ता के केंद्र में समस्या का शांतिपूर्ण समाधान ही रहता था। वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड में वर्णन मिलता है कि जब हनुमान सुग्रीव के दूत के रूप में किष्किंधा के बाहरी इलाके में पहली बार राम से मिले, तो श्रीराम हनुमान की संचार शैली और बोलने की कला से मंत्रमुग्ध हो गए थे। वह अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैंः देखो हनुमान ने कितनी उत्तम बात कही है। उन्होंने प्रासंगिकता और महत्व के बिना एक भी शब्द नहीं बोला और एक भी शब्द बर्बाद नहीं किया है, न ही उन्होंने कोई उचित शब्द छोड़ा। हनुमान जो कहना चाहते थे उसे व्यक्त करने में उन्होंने आवश्यकता से अधिक समय नहीं लिया है। उनके कहे शब्दों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। ऐसी आवाज सामान्य कल्याण को बढ़ावा देती है और आने वाली पीढ़ियों के दिल और दिमाग में हमेशा बनी रहती है। (दीक्षित, 2023) वहीं, हनुमान कुशल संवादकर्ता होने के साथ खोजी संवाददाता भी माने जाते हैं। (शर्मा, 2018) हालांकि, बहुत कम स्थानों पर उन्हें खोजी संवाददाता कहा गया है। यह वर्णन लंका जाकर माता सीता को खोजने से जुड़ा हुआ है। हनुमान लंका की अशोक वाटिका जाकर माता सीता से मिलते हैं और श्रीराम का संदेश उन्हें सुनाने के साथ उनका संदेश लेकर श्रीराम के पास आते हैं। हनुमान ने लंका की सुख–समृद्धि के लिए भी रावण को सलाह दी थी।

महाभारत के युद्ध का संजय द्वारा चित्रण

युद्ध संवाददाता का काम काफी जोखिम पूर्ण होता है और वह जंग के मैदान में स्वयं की जान को खतरे में डालकर पूरे युद्ध की कवरेज कर समाचार को लोगों तक पहुंचाते हैं। आधुनिक पत्रकारिता के समय में युद्ध संवाददाता एक प्रोफेशनल कार्य है, लेकिन भारतीय संचार क्षेत्र में इसका वर्णन 3137 ईसा पूर्व यानी महाभारत काल में मिलता है। (जोशी, 2017) कौरवों और पांडवों के मध्य हुई महाभारत की लड़ाई हस्तीनापुर और कुरुक्षेत्र के करीब 145 किलोमीटर दायरे में फैले मैदान में हुई थी। यह युद्ध करीब 18 दिनों तक चला था।' युद्ध के रण से काफी दूर बैठे देखने में अक्षम धृतराष्ट्र को पूरे घटना क्रम का सजीव वर्णन संजय के द्वारा किया गया था। महापुराण गीता का आरंभ भी धृतराष्ट्र और संजय के संवाद से ही होता

है। (जोशी, 2020) बताया जाता है कि संजय को दिव्य दृष्टि प्रदान थी और वह अपनी इसी कला के माध्यम से दूर रण में हो रहे महाभारत के युद्ध के देख पाते थे और उसका वर्णन धृतराष्ट्र को करते थे। एक देखने में अक्षम व्यक्ति को पूरी लड़ाई का वृतांत सुनाने का कौशल एक माहिर संवादकर्ता ही कर सकता है। ऐसे में संजय को पहले युद्ध संवाददाता के रूप में भी जाना जाता है। (जोशी, 2020) नारद मुनि और हनुमान की तरह संजय भी कुशल संवादकर्ता होने के साथ ही धृतराष्ट्र के मार्गदर्शक भी थे। अपनी स्पष्टवादी शैली के लिए प्रसिद्ध संजय धृतराष्ट्र को सलाह देने के साथ ही शकुनि की कुटिलता को लेकर सजग भी करते थे। (जोशी, 2020)

भारतीय मान्यताओं से प्रेरित हिन्दी पत्रकारिता का आरंभ

नारद मुनि को भारतीय मान्यताओं और कथाओं में सृष्टि का प्रथम संवाददाता माना जाता है। वे सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के 10 मानस पुत्रों में से एक हैं। हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार नारदजी का जन्म वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि को हुआ था। (भास्कर, 2021) वह पत्रकारों के प्रेरणा स्रोत भी माने जाता हैं। साथ ही उनकी जनकल्याणकारी और लोक कल्याणकारी संवाद पद्धति आज भी पत्रकारिता के मूलमंत्रों में समाहित है। वहीं, भारत के प्रथम हिन्दी समाचार पत्र उदंत मार्तंड के प्रकाशन पर भी देवर्षि नारद की प्रेरणा का प्रभाव दिखाई देता है। ऐसा इसलिए क्योंकि पं. जुगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से साप्ताहिक उदन्त मार्तण्ड का प्रारम्भ किया था। 30 मई 1826 को समाचार पत्र की शुरुआत की गई थी। 'भारत में हिन्दी पत्रकारिता के युग का आरंभ करने वाले पत्र के प्रथम अखबार के प्रकाशन के दिन हिन्दू कैलेंडर के अनुसार वैशाख कृष्ण द्वितीया तिथि ही थी।' (द्विवेदी, 2021) हिंदी पत्रकारिता की आधारशिला रखने वाले पं. जुगल किशोर शुक्ल ने उदन्त मार्तण्ड के पहले अंक के प्रथम पृष्ठ पर हर्ष व्यक्त करते हुए लिखा कि आद्य पत्रकार देवर्षि नारद की जयंती के पावन अवसर पर यह पत्रिका प्रारंभ की जा रही है। (द्विवेदी, 2021) ऐसे में स्पष्ट होता है कि हिन्दी पत्रकारिता प्रथम संवाददाता नारद मुनि के विचारों का प्रभावित रही और यह भी ज्ञात होता है कि परंपराओं में नारद जी का क्या स्थान है। साथ ही उदंत मार्तंड का अर्थ उदय होता सूर्य है। यह वाकई हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के उदय का माध्यम बना और भारतीय हिन्दी पत्रकारिता का आयाम स्थापित कर नए पत्रकारिता क्षेत्र में नये मापदंडों की स्थापना भी की। वहीं नारद मुनि की लोक कल्याण के विचार से ओतप्रोत संचार शैली की तरह ही पं. शुक्ल ने जनजागरण और भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए जागृत करने की दिशा में प्रयास किया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध आलेख में भारतीय संचार परंपरा और संवादकर्ताओं के कार्यों की विवेचना की गई। उपरोक्त अध्ययन में ज्ञान हुआ कि भारतीय ज्ञान और विज्ञान की तरह ही संचार परंपरा भी प्राचीनतम होने के साथ ही समृद्ध रही है। भारतीय संचार प्रणाली जितनी श्रेष्ठ रही

संचारकर्ता उतने ही विश्वसनीय रहे। देवर्षि नारद जी, हनुमान जी और महाभारत के संजय ने संवाददाता के हस्ताक्षर प्रस्तुत किए। साथ ही उनकी कार्यशैली हमेशा जनकल्याण और विश्वकल्याण के भाव से ओत–प्रोत रही। नारद जी ने जगत के प्रथम संवाददाता के रूप में जो मापदंड स्थापित किए वह वर्तमान आधुनिक पत्रकारिता और पत्रकारों के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य कर रहे हैं। वहीं भारत में हिन्दी पत्रकारिता का नया आयाम भी देवर्षि नारद की जनकल्याण की भावना से प्रेरित रहते हुए स्थापित हुआ। समग्र रूप से देखें तो भारत की ओर से पौराणिक काल में स्थापित किए गए संचार मापदंडों के अनुसार विश्व आज भी चल रहा है। ऐसे में संचार के क्षेत्र में भी भारत भूमि विश्वगुरु रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमार, केवल जे (2017). भारत में जनसंचार, संचार के सिद्धांतः एक परिचय 25–27. मुम्बईः जयको पब्लिशिंग हाउस.
2. महाराज, जगद्गुरु कृपालु जी (2023). नारद के भक्ति दर्शन. नई दिल्लीः जगद्गुरु कृपालु भक्ति योग तत्वदर्शन
3. गर्ग, डॉ. लक्ष्मी नारायण, नारद मुनि की आत्मकथा, नारद के भक्ति सूत्रः सार 11–13 एवं वाल्मीकि को राम का परिचय 27–31. नई दिल्लीः प्रभात .
4. दीक्षित, प्रो. सूर्यप्रसाद (2023). जन संचारः प्रकृति और परंपरा, भारत की प्राचीन–अर्वाचीन संचार–व्यवस्था. दिल्लीः ट्राईडैंट पब्लिशर्स.
5. तिवारी, आईपी (मार्च 1992). इंडियन थ्योरी ऑफ कम्युनिकेशन. कम्युनिकेटर, 35–38.
6. उपाध्याय, गिरीश (जनवरी–मार्च, 2016). संचारः ज्ञान का साधारणीकरण. मीडिया नवचिंतन, 47–53.
7. यादव, अवधेश कुमार (2019), मानव संचारः अवधारणा और विकास. शोधादर्श. Retrieved from https%//www.shodhadarsh.page/2019/11/maanav-sanchaar-avadhaarana-au-sygx9C.html
8. जोशी, अनिरुद्ध (2020). महाभारत के धृतराष्ट्र और संजय के बीच रोचक संवाद की 7 बातें. वेब दुनिया हिन्दी. Retrieved from https%//hindi.webdunia.com/mahabharat/dhritarashtra-and-sanjay-in-mahabharat-120101200032_1-html
9. जोशी, अनिरुद्ध (2018). कई किलोमीटर दूर से संजय देख रहे थे महाभारत का युद्ध, जानिए रहस्य. वेब दुनिया हिन्दी. Retrieved from https%//hindi.webdunia.com/mahabharat/sanjaya-mahabharata-story-in-hindi-118062800046_1-html accessed on 11/03/2024 at 09:34pm
10. जोशी, अनिरुद्ध (2017). महाभारत का युद्ध कब, किस तारीख को हुआ जानिए. वेब दुनिया हिन्दी. Retrieved from https%//hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-history/when-was-the-battle-of-mahabharata-fought-117051100063_1-html accessed on 11/03/2024 at 10:15pm
11. सबनानी, प्रह्लाद. देवऋषि श्री नारद जी लोक कल्याणकारी संदेशवाहक एवं लोकसंचारक थे. विश्व संवाद केंद्र भोपाल. https%//www.samvad.in/Encyc/2021/5/27/Narad-Jayanti-special.html accessed on 10/03/2024 at 08:10pm

12. द्विवेदी, संजय (27 मई 2021). सतत संवाद, सतत प्रवास, सतत संपर्क और लोकमंगल के लिए lapkj dh lh[k nsrs gSa ukjn th- çHkklk{kh- https%//www.prabhasakshi.com/column/narada-ji-teaches-continuous-dialogue-continuous-migration-continuous-contact accessed on 10/03/2024 at 08:30pm

13. शर्मा, डा. त्रिलोक (09 अप्रैल 2018). हनुमान – सर्वोत्कृष्ट संचारक. त्रिलोक शर्माः द सर्वाइवर. https%//triloksharma.net/2018/04/09/hanuman-the-communicator-par-excellence/ accessed on 10/03/2024 at 08:45pm

14. द्विवेदी, प्रो. संजय, (26 मई 2021). लोकमंगल के संचारकर्ता हैं नारद. अग्निबाण. https%//www.agniban.com/narada-is-communicator-of-lokmangal/ accessed on 13/03/2024 at 04:45pm

15. दैनिक भास्कर (2021). शास्त्रों में नारदजी को कहा गया है भगवान का मन, अपने ज्ञान और भक्ति से बने देवताओं के ऋषि. Retrieved from https%//www.bhaskar.com/jeevan-mantra/dharm/news/narad-jayanti-2021-who-is-narada-muni-who-was-the-father-of-lord-devrishi-narad-interesting-facts-and-history-about-narad-muni-128532431.html